ओ३म् तत्सत् परमात्मने नमः

आर्य हिन्दू और मसल्मान का अन्वेषण

संख्या......
तिथि......
पुस्तकालय......

पुस्तक संख्या २५

श्रीयुत स्वर्गवासी धर्मवीर पं० लेखराम जी आर्यपथिक कृत।

श्रीयुत पं० रामविलास शर्मा मन्त्री आर्यसमाज शाहाबाद जिला हरदोई अनुवादित

श्री स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती स्थापित वैदिकपुस्तकप्रचारकफण्ड" द्वारा प्रकाशित ॥

पं० तुलसीराम स्वामी सम्पादक "वेदप्रकाश" के प्रबन्ध से स्वामियन्त्रालय—मेरठ में छपाया ॥

आर्य संवत् १९७२९४८९९९ डिसम्बर सन् १९०७ ई०

प्रथमवार १०००

परिग्रहण कुमार

श्री स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती स्थापित वैदिक-
पुस्तकप्रचारकफण्डकार्य्यालय सदरमेरठ के विक्रेय
पुस्तकों का सूचीपत्र ॥

पुरुषसूक्त अर्थ सहित)॥ ईसाईमत संसार में कैसे फैला
पं० लेखराम जी कृत))॥ महाशङ्कावली)। १ भाग दूसरा
ाग)। आह्वा)। नीतिशिक्षावली)। सुशीलादेवी)। ईसा-
मतखण्डन १ भाग)। दूसरा)। शिवलिङ्गपूजाविधान)।
ीरामजीकादर्शन, कलियुगलीला, काशीमाहात्म्य)। नि-
यकर्मविधिः)। पुराणकिसनेबनाये, श्रीस्वामीशङ्करानन्द
अनमोल उपदेश, अमेरिकानिवासी मि० डेविस के
ार्य्यसमाज और स्वामी जी पर विचार, ईसाईलीला,
पुस्तकें आधे २ पैसे की हैं ॥ व्याख्याभीद्यानन्दमङ्का-
था)॥। मनुष्यजन्म की सफलता)॥ मनुष्यसमाज)॥
श्रीस्वामी जी का जीवनचरित्र)॥ पं० रामचन्द्रवेदान्ती
ा उत्तर)। रामायण का आह्वा)। (अन्य) धर्मप्रचार)॥
मस्ते)॥ वायुमण्डल)। आह्वाध्वनि धर्मसार १ भाग)।
सरा)। हरियशविनय)। शिक्षावली)॥

पता--ब्रह्मानन्द सरस्वती सदर--मेरठ

ओ३म्

हिन्दू-आर्य्य और नमस्ते का अन्वेषण २

धर्मवीर पं० लेखराम आर्यपथिक कृत तथा पं० आ
रामविलास शर्मा अनुवादित

समय ऐसा पलट गया, और अविद्याने वह दिवस दिखाया, कि लोगों को अपने शुद्ध नाम आदि कहलाने का भी विवेक न रहा। समस्तसंसार में उत्तम, सभ्य और यथार्थ नाम भुला कर एक गुप्त, कल्पित, असभ्य व निकृष्ट कलङ्क से हमारे भ्राताओं को प्रेम हो गया, और सच्चे नाम की प्रतिष्ठा दूर होकर उसका जानना व मानना भी मिट गया, और अविद्या का यहां लौं बसेरा हुआ कि आर्य्य के स्थान पर हिन्दू और आर्य्यावर्त्त के स्थान पर हिन्दोस्तान कहवाने व कहने लगे, शोक!३। अतएव उचित जान पड़ा कि विस्तारपूर्वक इसका अन्वेषण करके सत्यासत्य का पूरा प्रकाश किया जावे, जिस से विरुद्धपक्षी पुरुषों को कुछ बोलने का स्थान न रहे। विदित हो कि हम आर्य्य लोग इस हिन्दोस्तान व हिन्दू नाम को कई कारणों से बुरा जानते हैं। देखोः—

(१) हमारी जाति का हिन्दू नाम किसी संस्कृत पुस्तक में नहीं लिखा, वेद शास्त्र व पुराणों से लेकर सत्यनारायण की कथा (जिस्को बने थोड़ा समय हुआ) लौं में भी कहीं इस का चिह्न नहीं मिलता। अतः हमारा नाम हिन्दू नहीं॥

(२) कभी किसी दैनिकस्मृति (डायरी) तिथिपत्र, रोज़नामचह, वही, जन्मपत्री, टेवा, आदि में भी हिन्दू या हिन्दी शब्द व हिन्दोस्तान आदि नाम नहीं लिखे गये, जिस से उत्तम प्रकार सिद्ध है कि हम हिन्दू नहीं हैं॥

(३) हमारे यहां की भाषापुस्तकों में भी (जो मुसलमानी समय के प्रथम की रची हैं किन्तु इस्लामी समय की रचित पुस्तकों में भी) यह शब्द प्रयोग में नहीं आये, यहां लौं कि किसी धार्मिक वा जातीय रीति के समय अब तक हिन्दू आदि शब्द कार्य्य में नहीं लाये जाते हैं, अतएव किसी भांति स्वीकार नहीं कि हिन्दू नाम हमारा हो॥

पादरी टामसहावल अपनी "तशरीह अस्माय हिन्दू आर्य्य" नाम पुस्तक में कहते हैं कि यह हिन्दू शब्द उस नदी के नाम से बना है, जो सिन्धु कहाती है, क्योंकि प्रायः शब्द जो संस्कृत से फ़ारसी में आगये हैं, वह इस

प्रकार बदले हुये पाये जाते हैं। जैसे सप्ताह से हफ़्तह, दशम से दहम, सहस्र से हज़ार, इसी भांति सिन्धु का हिन्दू हो गया, ऐसा जान पड़ता है। जिस से प्रयोजन है कि सिन्धु नदी के तट के निवासी॥

उत्तर—पादरी साहेब इतना तो मानते हैं कि यह शब्द फ़ारसी का है, परन्तु संस्कृत से आया हुआ अर्थात् संस्कृत के सिन्धु से हिन्दू बना है, ऐसा कहते हैं। विदित हो कि यह भी अशुद्ध है, क्योंकि यूनानी लोग, रूम, ईरान, व अफ़ग़ानिस्तान के मार्ग से आर्य्यावर्त्त में आये और मार्ग में जैसा किसी देश का नाम सुना, वैसा ही प्रयोग किया, अक्षर "स, का "ह" से बदल जाना हम ने माना, परन्तु फ़ारसी में, संस्कृत में किसी भांति नहीं। हां संस्कृत में सिन्धु और सिन्धव (देखो निघण्टु १, १३ और उणादि कोष १,११) दोनों नदी को कहते हैं पर सिन्ध कदापि आर्य्यावर्त्तनिवासियों के लिये नहीं बर्त्ता गया, और न उचित है, लेकिन फ़ारसी लुग़ात (कोषों) के अनुसार जो इस शब्द के अर्थ हैं वह सहायक जान पड़ते हैं॥

सिन्द—दर फ़ारसी बकसरे सीन ब मानी—हरामज़ादा (जारज) बद (बुरा) शरीर (दुष्ट) काफ़िया मायूब (बुरा काफ़िया) देखो, कश्फ़, सिराज, मुंतख़िब व ग़यास, व

लतायफ़ुल्लोग़ात्। भारत की सीमा के निवासी विदे शि
को लूट लिया करते थे, इसलिये उन का नाम विदेशि
ने सिन्धु या हिन्दू रक्खा। और दोनों शब्द फ़ारसी
एक ही अर्थ रखते हैं, और इस देश की बोल चाल
भी नक़ब को सेंध कहते हैं, और अफ़ग़ानीभाषा में
को सेन कहते हैं जिस से सेंध लगाने वाले का नाम
यह सिन्धु या हिन्दू सिद्ध होता है, किसी उत्तम
का नहीं फिर आर्य्यों का? अतः आप का यह कथन
भांति अनुचित है॥

पादरी—सम्भव है कि यह हिन्दू नाम संस्कृत के
से बना हो। अर्थात् हीन और दोष से, जिस्के
निर्दोष के हैं। और सम्भव है कि अधिक प्रयोग में
के कारण कुछ शब्द छूट भी गये हों, जैसा कि
स्थान के स्थान पर हिन्दुस्तान बोला जाता है और
भी स्वीकार करती है कि हिन्दुओं के पूर्व पुरुषों
बुद्धिमान् थे, इसी नाम को जिस्के अर्थ निर्दोष के हैं
जाति के लिये स्वीकारलिया हो॥

उत्तर—आप का कल्पित सम्भव संस्कृत के अनुस
हाअसम्भव है क्योंकि संस्कृत के किसी कोष या

हास में इस्का पता नहीं मिलता, अतएव हिन्दुओं के पुरुषाओं का प्रचरित किया हुआ यह नाम नहीं। किन्तु अन्य जातियों का आर्य्यों के विषय में कलङ्क है, और यह शब्द हिन्दूस्थान भी महाअसम्भव और बेजोड़ है क्योंकि एक फ़ारसी दूसरा संस्कृत है। हां-इस्के मानने से किसी को नाहीं नहीं कि जिस भांति और भाषायें संस्कृत से निकली हैं उसी भांति संस्कृत के स्थान से फ़ारसी का "सितां" बना है-परन्तु अरबिस्तान, अफ़ग़ानिस्तान, फ़िरंगिस्तान, इंगलिस्तान, जाबुलिस्तान, तुर्किस्तान, बिलोचिस्तान, गुलिस्तां, बोस्तां, दबिस्तां, ताकिस्तान, नख़लिस्तान चमनिस्तान की भांति हिन्दोस्तान भी है, कोई शब्द इस में से छूटा हुआ नहीं है। अतः यह आप का कथन अत्यन्त निर्मूल है कि यह हिन्दुओं की बनावट है। नहीं २ महाशय यह विदेशियों का लगाया कलङ्क है और सब से अधिक यह मुसलमानों के कारण काम में लाया जाता है जैसे कि इस्के प्रमाण में निम्न लिखित साक्षियां हैं॥

(१) हज़रत मासियः की माता का नाम हिंदिया था, क्यों कि वह श्यामवर्ण (कालेरंग) की थी। (मसालिब)॥

(२) "हिन्द, बिलकस्र, नाम ज़ने कि क़ातिल अमीर हम्ज़ा-

बूदह अस्त" (मुंतख़िब)

अर्थ–हिंद एक स्त्री का नाम था जिस ने अमीर हम्ज़ा को वध किया (अनुवा०)

(३) "हिंदू–दर मुहावरे फ़ार्सियां ब मानी दुज़द व रहेज़न गुलाम मेआयद (ख़ायाबां–ग़यास)

अर्थ–हिंदू शब्द फ़ार्सियों के मुहाविरे में चोर, राहलूटने वाले व गुलाम अर्थ में आता है। (अनुवादक)

(४) हिंदूज़न–ज़नेसाहेरारागोयंद अर्थात् जादूगरनी स्त्री। (ग़यास–करीम)

(५) हिंदूया अर्थात् हिंदोस्तान, या, दवात (सियाही) "कश्फ़"

(६) हिंदूयपीर–ज़ोहल कि दर आस्मान हफ़्तुम अस्त व पास्बान मुल्क अस्त व रंग सियाह दारद, अक्सर पासियान हिंद कि इशारा सादही गोयंद रंग सियाह मेबाशद (कश्फ़)

अर्थ–शनैश्चर जो सातवें आस्मान में है और देश का निगहवान (रक्षक) है, रंग उसका काला है। अक्सर हिंदोस्तान के पासी जिन को सादही या साधी कहते हैं उन का रंग काला होता है। (अनुवादक)

(७) हिंदूयचर्ख़ हफ़्तुम, बिलकस्र यानी ज़ोहल कि नहस

व सियाह अस्त। (कश्फ़ुल्बुर्हान)

अर्थ–शनैश्चर जो अशुभ व काला है। (अनुवादक)

(८) हिंदूयबारीकबीं व हिंदूयसिपहेर हफ़्तुमी, व हिंदूयगुंबदेगर्दी, ज़ोहल (शनैश्चर) (कश्फ़)

(९) हिंदूयतो, बिलकस्त्र गुलाम व बंदये तो (कश्फ़)

अर्थ–तेरा गुलाम, (अनुवा०)

(१०) हिंदू–बकस्त्र गुलाम, बंदह, काफ़िर व तेग़ (कश्फ़)

(११) चार हिंदू दरयके मस्जिद शुदंद, बहेरे ताअत राके ओ साजिद शुदंद।

अर्थ–चार हिंदू (गुलाम) एक मस्जिद में इबादत करने व सिजदा करने गये। (अनुवादक)

(१२) जुल्फ़ दिल् बंदशसबारा बंददर गर्दन नहद् बा हवादाराने रहेरो हीलये हिंदूबबीं॥

अर्थ–उसकी यानी माशूक़ की दिलफ़रेब जुल्फ़ हवा की गर्दन में भी गिरहें लगाती है। इस जादूगरनी के फ़रेब को देखो हवा की तरह राह चलने वालों के साथ क्या कर रही है। (अनुवादक)

(१३) अगर आंतुर्कशीराजीबदस्त आरद दिलेमारा, बख़ाले हिंदुअश बख़्शम समरकंदोबुख़ारारा (हाफ़िज़)

अर्थ–अगर वह शीराज़ का सिपाही (माशूक़) मेरे दिल

को अपने कब्ज़े लावे तो मैं उसके स्याह तिल पर समरक़न्द व बुखारा निछावर करदूं (अनुवा०)

(१४) ख्वाजयेरा बूद हिंदू बन्दये। पर्वरीदा कर्दा ओरा ज़िन्दये (मस्नवीरूमी)

अर्थ—एक ख़्वाजे का एक काफ़िर गुलाम था उस ने उस को पाला और जीवित किया। (अनुवादक)

(१५) दो हिंदू बर आयदज़े हिंदोस्तान। यके दुज़दबाशद यके पास्बान (सादी)

अर्थ—जो हिन्द से दो हिंदू आवें तो एक उन में से चोर हो दूसरा चौकीदार (अ०वा०)

(१६) दो हिंन्दूये अज़पस संगे बरबर आवुर्दन्द (गुलिस्तां)

अर्थ—पत्थर की आड़ से दो चोर दिखाई दिये (अ०वा०)

(१७) हिन्दूयनफ़्त अन्दाज़ी मे आंमोख़्त—हकीमें गुफ़्त तुरा कि ख़ाना नेईन अस्त—बाज़ी न ईन अस्त— (गुलिस्तां)

अर्थ—एक हिन्दू अग्नि चलाना सीखता था, एक बुद्धिमान् ने कहा कि तेरा घर बांस का है अर्थात् छप्पर है, यह खेल नहीं है। यहां हिन्दू का अर्थ गंवार, झोंपड़े का रहने हारा, बिना सोचे काम करने वाला। अ० वा०

(१८) चे हिन्दू हिन्दुये काफ़िर। चे काफ़िर काफ़िरे रहेज़न। चे रहेज़न रहेज़ने ईमां। (चमने बेनज़ीर)

अर्थ—कैसा हिन्दू हिन्दूय काफ़िर। कैसा काफ़िर काफ़िरे रहज़न। कैसा रहज़न, ईमान का। (अनुवादक)

(१९) ख़ालेनबर आरिज़े आं शाहेद मस्त अस्त। हिन्दू बचा ईस्त कि ख़ुर्शेदपरस्त अस्त। (कुल्लियात)

अर्थ—माशूक़ के गाल पर तिल नहीं है। वह एक हिन्दू का लड़का है। जो सूर्य्य को पूज रहा है॥ (अ० वा०)

(२०) जहां हिन्दूस्त ता रख़्त न गीरद। बगीरश मुस्त ता सख़्त न गीरद (शीरींख़ुसरो)

अर्थ—दुनिया चोर या डाकू है। ऐसा न हो तेरा अस्बाब ले लेवे। तू उस्के साथ सख़्ती कर। ताकि वह तेरे साथ सख़्ती न कर सके। (अ० वा०)

(२१) दोगे सूयश दो हिन्दूये रसनबाज़। ज़ेशमशादे सर अफ़राज़श रसनसाज़ (ज़ुलेख़ा)

अर्थ—माशूक़ की ज़ुल्फ़ें दो नट हैं। जो उस्के क़द (शरीर) पर खेल रहे हैं। वा कला कर रहे हैं (अ० वा०)

(२२) यके ख़ाले सियह जाकर्द बर कुंजे लबे लालश। तो गोई बर लबे आबेबक़ा बेनशिस्त हिन्दूये। (ज़हीर फ़ार्यांबी)

अर्थ—माशूक के लाल होठों के निकट जो तिल है वह ऐसा जान पड़ता है कि अमृतकुण्ड के पास एक हिन्दू बैठा है (अ० वा०)

(२३) कुनद दर पेश पाये आंनिगारी सिजदहाज़ुल-फ़श। बलेकारे बेह अज़ आतिशपरस्ती नेस्त हिंदूरा। (दीवानगनी)

अर्थ—उस के रंगे हुये (महावर लगे) पावों पर जो उस की ज़ुल्फ़ लटकती है तो आश्चर्य क्या। हिंदू का काम ही अग्निपूजा है। (अनुवादक)

(२४) मन आं तुर्के सियह चश्मम् बरीं बाम। कि हिन्दूये सफ़ेदत शुद मरा नाम (शींरी ख़ुसरी)

अर्थ—मैं इस अटारी पर ऐसा काली आंख वाला सिपाही हूं कि मेरा नाम सफ़ेद हिन्दू हुआ। और यही शब्द फ़ार्सी अर्बी इब्रानी आदि भाषाओं में लगभग इन्हीं अर्थों में प्रयोग किया गया है। किन्तु ऐसी स्यात् ही कोई पुस्तक होगी जिस्में यह शब्द इन अर्थों में न आया हो। जिस से सब भांति सिद्ध है कि यह हमारा नाम नहीं, सर्वथा त्याग करने योग्य है और शत्रुता व डाह से रक्खा गया है, जैसे कि हम ने उन के लिये यवन, म्लेछ आदि॥

(पादरी) फिर संस्कृत भाषा में नाम आर्य्य वा फ़ार्सी में ईरानी दोनों ही एक मस्दर या धातु " आर " से निकले और आर्य्य व ईरानी के अस्ल अर्थ हल चला कर खेती करने वाले के हैं और वास्तव में यह नाम आर्य्य जाति के लोगों का उस समय था जब यह केवल खेती कर के हलवाही करने से रोटी कमाते थे ॥

(उत्तर) खेद का स्थान है कि जिन को मस्दर या धातु का ज्ञान नहीं वह भी आक्षेप करने पर कटिबद्ध हो जाते हैं। हज़रत ! "आर" धातु नहीं किन्तु "ऋ" है। जिस से संस्कृत में आर्य्य और अर्य्य नाम बने हैं। और इसी से फ़ार्सी पहलवी में ईरानी बना है परन्तु आर्य्य व अर्य्य भी एक नहीं वह और रीतियों से बना है और यह और से। पहला समस्त जाति (ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र) का नाम है और दूसरा केवल वैश्य का। जैसा कि वैश्यों के (मनुस्मृति अध्याय १ श्लोक ९० में)—

पशूनां रक्षणं दानमिज्याध्ययनमेव च ।
वणिक्पथं कुसीदं च वैश्यस्य कृषिमेव च ॥

पशुओं की रक्षा, दान देना, यज्ञ करना, पढ़ना, व्यापार करना, ब्याज लेना, खेती करना, सात काम लिखे हैं और पञ्जाबी मसल है—उत्तम खेती मध्य व्यापार। निषि

चाकरी भीख गमार ॥ आर्य्य के अर्थ संस्कृत के अनुसार महान् श्रेष्ठ विद्वान् धार्मिक व ईश्वरभक्त के हैं और ऐसा ही कथन मैक्समूलर साहब का भी है। (देखो सायन्स आफ़ दी लैंगवेज पृष्ठ २७५) कि "आर्य्य के अर्थ महान् विद्वान् देवता और सभ्य व शीलवान् देवताओं की प्रतिष्ठा करने वाला हैं। क्योंकि यह शब्द दस्युओं के विरुद्ध है" ॥

और समस्त आर्य्य कभी खेती नहीं करते थे किन्तु आदि ही से वह चार भागों में विभाजित हैं जिस्की आज्ञा पवित्र वेद में भी है। मानो वही शिक्षा इस्की जड़ है अर्थात् विद्या का पढ़ना पढ़ाना यज्ञ करना कराना दान देना लेना जो मुख्यकर्म हैं उन का करने वाला ब्राह्मण। विद्या पढ़ना दान देना यज्ञ करना देश व जाति की रक्षा करना जो शारीरिक बलसम्बन्धी हों इन का कर्त्ता क्षत्री और उपरोक्त लेखानुसार देशाटन करके व्यापार करने हारा वैश्य। और महामूर्ख सेवक का नाम शूद्र है। परन्तु सदा आर्य्यजाति में से वैश्य कृषि करनेहारे रहे। या खेती करने हारा वैश्य नाम से प्रसिद्ध रहा। पर समस्त मनुष्यों का कार्य्य प्राकृतिक नियमानुसार खेती ही करना नहीं है। नहीं तो विद्या शूरता रक्षा देश की सेवा

परोपकार कौन करे। और इसी प्रकार ईरानी जाति भी विभक्त है। और पुस्तक " दबिस्ताने मज़ाहेब " और "ज़िन्दावस्ता " व "आबेहयात" से उत्तम प्रकार प्रमाणित है। और इसी की पुष्टि मैक्समूलर के यहां से भी प्रकट है। अर्थात् पार्सी जन आर्यावर्त्त से उठ कर ईरान में बसे (देखो सायंस आफ़ दी लैंगवेज पृष्ठ २८८) और इतिहास भी इस की साक्षी देता है कि प्राचीन यूनानी व रोम वाले व अंग्रेज़ व फ्रांसीसी व जर्मनी व फ़ार्सी आदि सब के पूर्व पुरुष आर्य थे (देखो तवारीख़हिन्द) अतएव उचित है कि आप इस भूल की भी दवा करें। और इस प्रकार के कल्पित वा मन गढ़ित दावों से हाथ उठावें॥

(पादरी) जैसे कि इस पञ्जाब में भी खेती करने वाले आराय कहाते हैं॥

(उत्तर) जनाब ! अराय शब्द संस्कृत का नहीं किंतु पंजाबी है। जहां लौं विचार पूर्वक दृष्टि की जाती है, अरायं नाम जाति मुसलमान ही हैं। हिंदू कोई नहीं। जिस से तात्पर्य्य यह निकलता है कि यह नाम उन का अरबी के राई से बिगड़ा हुआ है। और किंचित् परिवर्त्तन उच्चारण "ऐन " से (जो कुछ कंठ द्वारा बोलने में कठिन है) उस का रायें या अरायें बोलना किंचित् भी

कठिन नहीं। (राई-शबां-निगहबान) अर्थात् चौपावों का चराने वाला (ग़यास)। और यही आप का प्रयोजन है। अतःयह शब्द भी अर्बी के राई से बना है संस्कृत नहीं ॥

(पादरी) और प्रायःइस पेशा के लोग पशुओं विशेष कर बैलों पर अत्याचार किया करते हैं और अनबोल पशुओं को अपनी छड़ी से जिस के सिरे पर एक लोहे की नोकदार कील लगी हुई होती है, चुभो चुभो के हांका करते हैं। और इस सबब से वह नोकदार कील "आर" कहाती है ॥

(उत्तर) हज़रत! यह उन निर्दयमूर्खों का महा अत्याचार है और धर्मशास्त्रानुसार ऐसे जन दण्ड पाने योग्य हैं। जैसा कि महाराजा जम्बू-कपूर्थला—नाभा-झींद—योधपुर आदि के राज्यों में कोई काम में नहीं लाता। जो लाता है, दण्ड पाता है। देखो (रणवीर दण्ड आदि) और बटाला में भी कुछ मुसलमान व हिंदू और ईसाई साहेबों के उद्योग से पशुक्लेशनिवारिणी सभा (अंजुमनहम्दर्दी हैवानात) बनी हुई है। और राजनियम भी ऐसे जनों के लिये प्रचरित है (देखो एक्ट ५ सन् ६९ दफ़अ ३४)। "आर" शब्द भी संस्कृत का नहीं किन्तु

फ़ार्सी का है। जैसा कि अर्रा-अर-काबुल अफ़गानिस्तान पेशावर में लकड़ी चीड़ने व जूती सीने वाले लोहे के औज़ार को कहते हैं। सम्भव प्रतीत होता है कि फ़ारसी के इन शब्दों से ही यह शब्द इन निर्दय मूर्खों ने सुन सुना कर प्रचरित किया हो तो आश्चर्य्य नहीं। किन्तु ऐसा निश्चय होता है॥

(पादरी) अतःजब इस जाति ने धीरे २ विद्या शिल्प व वाणिज्य में उन्नति की तो आर्य्य नाम जो केवल कृषक के लिये था छोड़ दिया और आर्य्य नाम के स्थान पर हीनदोष को जो धीरे २ हिन्दू होगया है अपनी जाति पर प्रचरित कर लिया है। और यह "हिन्दू" "आर्य्य" नाम की अपेक्षा अधिक इस जाति में प्रसिद्ध होगया॥

उत्तर—आप का यह आक्षेप भी अत्यन्त कच्चा है। कभी किसी संस्कृत के वा प्राकृत के विद्वान् ने यह नाम (हिन्दू) अपनी जाति का नहीं लिखा परन्तु परवशता से व हाकिम का हुक्म मृत्युसमान जान कर मुसलमानों के समय से फ़ारसी का प्रचार होने से कार्य्यालयों में यह नाम लिखा जाने लगा। और अन्त में सम्पूर्ण देश मुसलमानों का हिन्दु (गुलाम) हो गया। आप का यह कथन कि जब इस जाति ने विद्या शिल्प वाणिज्य में उन्नति की

तो आर्य्य नाम छोड़ दिया। महाव्यर्थ व असत्य है। किन्तु धोखा देना है। जब तक शिल्प विद्या वाणिज्य में उन्नति रही तब तक आर्य्य नाम रहा और जब से आलस्य व इन्द्रियारामता ने घेर लिया। विद्या शिल्प वाणिज्य व देशाटन से हाथ उठाया। हिन्दू काफ़िर गुलाम नीमव-हशी होगये। जैसा कि "तवारीख़ हिन्द" भी बताती है कि आर्य्य लोग सदा से फ़िलास्फ़ी के प्रेमी रहे और गणित व विज्ञान के प्रथम गुरु यही हैं। इसी कारण वह आर्य्य अर्थात् श्रेष्ठ कहाते थे। ईरान का "दारा" बादशाह भी आर्य्य होने को स्वीकार करता था कि मैं आर्य्य हूं और आर्य्यों की सन्तान से हूं। क्योंकि उसके प्रपितामह (पर्दादा) का नाम ऐर्य्यारमना था (देखो सायंस आफ़ दी लैंगवेज मैक्समूलरकृत-पृष्ठ २८०)

पादरी—जो कहते हैं कि यह नाम हमारी जाति का हमारे शत्रुओं अर्थात् मुहम्मदियों ने रक्खा है। यह महा अशुद्ध ही नहीं किन्तु धोखा है॥

उत्तर—यह नाम हमारी किसी पुस्तक धार्मिक ऐतिहासिक या विद्यासम्बन्धी में कहीं नहीं है। और विरोधियों व विदेशियों की किताबों में सैकड़ों स्थानों पर

है। जिस से नमूने के लिये थोड़े स्थान हम ने लिख दिये। अतएव इस दशा में हम आप के इस इन्कार को इस के अतिरिक्त कि आप जानते हुये भी नहीं मानते और क्या कहें। केवल इसलिये जिस से हिन्दू भाइयों को सत्य वेदोक्त धर्म से पृथक् रख के धोखा दे चापलूसी करके ईसाई बना लिया करें। और उन को आर्य्य नाम से घृणा हो जाय। पादरी साहब ने यह जाल फैला कर उन को मार्ग भुलाना चाहा और कुछ नहीं॥

अतएव प्रत्येक बुद्धिमान् जान सक्ता है कि यह नाम जब हमारे विरोधियों की पुस्तकों में (चाहो वे ईरानी हों वा अफ़ग़ानी अथवा यूनानी ऐराबी वा रूमी) उपस्थित है। तो उन का दावा महान् असत्य है। जिस पर हमें कहना पड़ा कि पादरी ने धोखाबाज़ी से काम लिया और सत्य से मुख मोड़ा। हम उन को "चेलैंज" करते हैं कि वह या उन का कोई और इलाहमी मित्र या शेषभोजी (मिर्ज़ा गुलाम अहमद आदि) हिन्दू नाम किसी संस्कृत पुस्तक में दिखादे। और सिद्ध व प्रमाणित करा। नहीं तो यह छल कपट का तौक़ क़यामत लों यहूदा*३-

* यह ईसा मसीह का एक चेला था। जिस ने तीस

स्क्रटी व †यज़ीद की भांति दग़ाबाज़ के गले में रहैगा ॥

पादरी—क्योंकि यह नाम उन किताबों में पाया जाता है जो मुहम्मद साहब की उत्पत्ति से बहुत पहिले लिखी गई थीं। जैसे—अस्तर की किताब जो हज़रत मुहम्मद की उत्पत्ति से एक सहस्र वर्ष प्रथम लिखी गई थी। उसके पहले बाब (अध्याय) की पहली आयत में "हिन्दोस्तान" है। इसी भांति "फ़्लावेसज़ूस्फ़" यहूदी इतिहासलेखक भी अपनी पुस्तक में "हिंदोस्तान" का नाम लिखता है। जो मुहम्मद साहेब की उत्पत्ति से ६०० वर्ष प्रथम हुआ है (देखो उस किताब की ८ बाब ५) अतः प्रकट है कि मुहम्मद साहब के बहुत पहले यह देश "हिंदोस्तान" के नाम से प्रसिद्ध था और इसके निवासी हिन्दू कहलाते थे ॥

(उत्तर) यह प्रमाण भी आप के विश्वास की दृढ़ता नहीं करता क्योंकि हमारा दावा यह है कि हमारी

रुपये के लोभ से अपने गुरु ईसा को पकड़ा दिया था (अनुवादक)

†यह मावियां का बेटा था। जिस के द्वारा इमाम हसन व हुसेन धोकेसे वध किये गये—(अनुवादक)

पुस्तकों में हिन्दू नाम नहीं है और न संस्कृत का शब्द है शेष रहा अस्तर में या यहूदियों के इतिहास में होना—

प्रथम पुस्तक सिकन्दर के समय के निकट बनी हुई है (देखो अस्तर की किताब इबरानी बाइबिल पृष्ठ ११८७ छपीहुई सन् १८७८ ई० लंडन) मसीह से ५२१ वर्ष पहले ॥

और दूसरी मसीह के पीछे की है । और जहां तक अन्वेषण हो चुका है यही समय है—जब से यह बुरा नाम हमारे और हमारे देश के लिये विदेशियों ने प्रयोग करना आरम्भ किया । आपके कथन से भी यह नाम विदेशियों की पुस्तक में लिखा पाया जाता है हमारे देश की पुस्तकों में नहीं। अतः यह भी हमारे दावे का प्रमाण है और आप के लिये हानिकारक । क्योंकि हमारे यहां प्रसिद्ध है कि यह नाम यवन लोगों ने रक्खा है ॥

साधारण आक्षेप—हिंदू नाम इंदु से बना है। और इंदु कहते हैं चन्द्रमा को अर्थात् चंद्रवंशी ॥

उत्तर—हम मानते हैं कि इन्दु चन्द्रमा को कहते हैं परन्तु संस्कृत में यह कैसे बनगया । और इसके अतिरिक्त क्या समस्त हिन्दू चन्द्रवंशी हैं या सूर्य्यवंशी ब्रा-

ह्मण वैश्य शूद्र नहीं है और इन्दु केवल चन्द्रमा को कहते हैं—वंशी कहां से आगया और किस के अर्थ हुये और क्यां यह नाम इस धातु से भी किसी संस्कृत पुस्तक में आज तक अङ्कित नहीं है और क्या चन्द्रवंशी के अतिरिक्त और लोग अपने आप को हिन्दू नहीं कहलाते हैं या सूर्यवंशी से कोई और नाम निकला है और क्या आप को छोड़कर संसारभर में किसी को यह बात मालूम नहीं। जबकि इन ऊपर लिखी हुई बातों में से कोई भी ठीक नहीं होसक्ती है अतः यह बात भी महानिर्मूल है। क्योंकि अबलों चन्द्रवंशी सूर्य्यवंशी इत्यादि शतशः गोत्रों की जातियां आर्य्यावर्त्त में उपस्थित हैं परन्तु हिन्दू का चिन्ह भी नहीं। अब कुछ थोड़ा सा इस बात का भी प्रमाण दिया जाता है कि हमारा नाम आर्य्य किन २ पुस्तकों में लिखा है। अधिक दृढ़ प्रमाण के विचार से मूलपाठ प्रमाण सहित लिखे जांयगे॥

(१) ऋ० मं० १ सू० १०३ मन्त्र ३—

सजातूभर्माश्रद्दधानओजः पुरोविभिन्दन्नचरद्विदासीः। विद्वान्वंज्रिन्दस्यवेहेतिमस्यार्य्यंसहोवर्धयाद्युम्नमिंन्द्र॥

(२) ऋग्वेद मंडल १ सूक्त ५१ मंत्र ८—

विजानीह्यार्य्यान् ये च दस्यवो बर्हिष्मते रन्धया शासदव्रतान् । शाकीभव यजमानस्य चोदिता विश्वेत्ता ते सधमादेषु चाकन ॥

(३) मनुस्मृति अध्याय २ श्लोक २२ तक—

आसमुद्रात्तु वै पूर्वादासमुद्रात्तु पश्चिमात् ।
तयोरेवान्तरं गिर्य्योरार्य्यावर्तं विदुर्बुधाः ॥

(४) मनुस्मृति अ० १० श्लो० ४५—

मुखबाहूरुपज्जानां या लोके जातयो बहिः ॥
म्लेच्छवाचश्चार्य्यवाचः सर्वे ते दस्यवःस्मृताः ॥

(५) न्यायदर्शन अ० १ सू० १० वात्स्यायनभाष्य ऋष्यार्य्य० इत्यादि ॥

(६) काशिका अ० ४ पाद १ सूत्र ३०—

केवलमामकभागधेयपापापरसमानार्य्यकृतसुमङ्गल-भेषजाच्च ॥

(७) काशिका अ० ४ पाद १ सू० ४९—

इन्द्रवरुणभवशर्ववरुद्रमृडहिमारण्ययवयवनमातुलाचार्य्याणामानुक् ॥

इस का काशिकाकार का भाष्य—

आर्य्यक्षत्रियाभ्यां वा। आर्य्याणी आर्य्या ॥

(८) गीता अध्याय २ श्लो० १०—

अनार्य्यजुष्टमस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन ॥

(९) भारत उद्योगपर्व

श्रुतं प्रज्ञानुगं यस्य प्रज्ञा चैव श्रुतानुगा।
असंभिन्नार्य्यमर्यादः पण्डिताख्यां लभेत सः ॥

(१०) पञ्चतन्त्र, हितोपदेश प्रथम अध्याय आर्य्य

(११) „ द्वितीय अध्याय आर्य

(१२) „ तृतीय अध्याय आर्य

(१३) „ चतुर्थ अध्याय आर्य

(१४) „ पञ्चम अध्याय आर्य

(१५) वाल्मी० रामायण बा० कां० सर्ग १० श्लोक १६ व ३५ ॥

सर्वदाभिगतः सद्भिः समुद्रइव सिन्धुभिः।
आर्यः सर्वसमश्चैव सदैव प्रियदर्शनः ॥

(१६) गत्वा तु स महात्मानं रामं रामपराक्रमम्।
अयाचद्भ्रातरं तत्र आर्य्यभावपुरस्कृतः ॥

(१७) वाल्मीकीय रा० य० किष्किन्धाकाण्ड सर्ग १९श्लो०२८—

सुसवे पुनरुत्थाय आर्य्यपुत्रेति वादिनी ।
रुरोद सा प्रतिद्वन्द्वसंवीतं मृत्युदामभिः ॥

डिक्शनरी कलां (बड़ी) संस्कृत व अंगरेज़ी छपी हुई कलकत्ता पृष्ठ १२४ सन् १८९४ ई०—

(१८) आर्य्य (१९) आर्य्यक (२०) आर्यगर्ह्य (२१) आर्यपुत्र (२२) आर्यप्राय (२३) आर्यरूप (२४) आर्यलिंगन (२५) आर्यावर्त्त (२६) आर्यदेश (२७) आर्यगीत (२८) " अहम् आर्यः" हेमकोष प्रथम कांड (२९) " देवार्यज्ञातनन्दनः" मृच्छकटिकानाटक। कोषशब्दार्थभानु से—पृष्ठ ५० सन् १८९५ में छपी हुई लाहौर ॥

(३०) आर्य (३१) आर्यक (३२) आर्यपुत्र (३३) आर्यमिश्र (३४) आर्यावर्त्त ॥

(३५) आर्य से ही ईरान व आर्मेनिया यह शब्द भी निकलते हैं और " एरी " कि आर्य से बना है आर्मिनियनों के यहां उस के अर्थ शूर वीर के हैं (देखो साइंस आफ दी लैंगवेज पृ० २८१) ॥

(३६) जो देश आर्यों के रहने का स्थान है उस का

नाम एरिया है यह जिन्दवस्ता में लिखा है (देखो सा० आ० लैं० पृष्ठ २८१ मैक्समूलर)

(३७) गुरुविलास–जो तुम सिक्ख हमारे आरज। देव शीस धर्म के कारज ॥

(३८) विवेकविलास ग्रन्थ में बौद्धों का मत ऐसा लिखा है ॥

बौद्धानां सुगतोदेवो विश्वं च क्षणभङ्गुरम्।
आर्य्यसत्याख्यया तस्य चतुष्टयमिदं क्रमात् ॥

(३९) प्रतिदिन का संकल्प ॥

ब्रह्मणो द्वितीयप्रहरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे।
जम्बूद्वीपे आर्यवर्तान्तर्गते-इत्यादि ॥

इस से प्रत्येक बुद्धिमान् जान सक्ता है कि हमारा नाम आर्य्य है या हिन्दू। और मुल्क का नाम आर्य्यावर्त है या हिन्दुस्तान। हम ने सत्यासत्य के प्रकाश के अर्थ बहुत से प्रमाण दोनों नामों के विषय में लिख दिये हैं पाठकजन सत्य व असत्य में विवेक कर के जाति व देश को इन कलंकित नामों से बचाने का उद्योग करैं ॥

पत्र की नक़ल ॥

श्रीयुतसम्पादक जी * आर्य्यगजट, नमस्ते—

निम्न लिखित लेख को अपने बहुमूल्य पत्र के किसी कोण में प्रकाशित करके बाधित कीजियेगा जो "†नूर-अफ़शां" के आक्षेपों में से आर्य्यशब्द के विषय में है॥

पादरी साहब को "आर्य्य" शब्द के अन्वेषण के प्रथम इस बात का अन्वेषण करना चाहिये जो अधिक आवश्यक है कि सब भाषाओं में मातृभाषा कौन है और प्राचीनताका दावा किसे है। पूर्ण निश्चय है कि इस बात का अन्वेषण करते ही उत्तम प्रकार देववाणी संस्कृत के अतिरिक्त और किसी भाषा का दावा प्राचीनता व भाषाओं की माता होने का प्रमाणित न होगा। अतः जब संस्कृत ही सब भाषाओं की माता है तो मुख्य कर और जब आर्य्य शब्द उसी भाषा का है तो साधारणतया

---

*यह आर्य्यसामाजिक साप्ताहिक पत्र उर्दू में फ़ीरोज़पुर (पंजाब) से प्रकाशित होता था अब लाहौर से (अनुवादक)

†नूरअफशां-यह ईसाइयों का पत्र लुधियाने से प्रकाशित होता है अ० वा०—

(उमूमन) संस्कृत ही में ढूंढना सत्य व ठीक है। और संस्कृत की लुगात (कोषों) व धातु को त्याग कर दूसरी (आफ़टरबोर्न डैलेक्टस) भाषाओं में जो मूल के सम्मुख शाखा के तुल्य हैं, आर्य्यशब्द (जिस का अन्वेषण करना है) के धातु व उसके निकलने का स्थान ढूंढना ठीक ऐसा ही है जैसे "§जमैका" के सुवर्ण की खानि पर बैठ कर मोर पंख से सीना निकालने की चिन्ता में शीश मारना। अस्तु-पादरी साहेब तो क्या सम्पूर्ण धरामण्डल पर कोई भी ऐसा देश नहीं जहां के विद्वान् संस्कृत के गौरव व प्राचीनता को उत्तम प्रकार स्वीकार न करते हों और प्रमाण की ओर ध्यान दिलाने पर उस के सबभाषाओं की माता होने में संदेह करें। अतः पादरी साहब को यदि न मालूम हो तो अब जानलें कि आर्य्य शब्द का धातु प्रत्यय और अर्थ निम्न लिखित हैं॥

आर्य्य-पुंल्लिङ्ग। अर्तुं योग्यः अर्य्यते वा ऋगतौ ऋहलोर्ण्यत् इति स्वामिनि-गुरौ-सुहृदि-श्रेष्ठकुलोत्पन्ने-पूज्ये-श्रेष्ठे-संगते-नाटयोक्तौ-मान्ये-उदारचरिते-शान्तचित्ते-कर्तव्यमाचरन्नकाममकर्तव्यमनाचरन्। तिष्ठति प्राकृताचारे सतु आर्य्य इतिस्मृतः॥

---

* एक टापू का नाम है-

यदि पादरी साहेब संस्कृत जैसी देववाणी के समझने की शक्ति न रखने के कारण या हठधर्मी की ऐनक नेत्रों पर लगाने से केवल आफ़्टर बोर्न (पीछे से उत्पन्न) भाषाओं ही में उत्तम प्रकार विज्ञता रखते हों तो भी आर्य्य शब्द के अर्थ लग भग उन भाषाओं में भी इस कारण कि वह सब संस्कृत की शाखा हैं बड़े व प्रतिष्ठित के पाये जाते हैं जैसे–

१ आर–फ़, आराय=संवारने वाला

२ अर्ज–फ़०=प्रतिष्ठा–पद । ३ अर्ज–अ०=ऊंचा ।

४ आर्य्यन=नाम एक कवि का ।

यद्यपि आर्य शब्द का शब्दसम्बन्धी अन्वेषण महोत्तम भाषा को त्यागके दूसरी भाषा में करना महामूर्खता है तो भी दो लाभ अवश्य हैं । प्रथम यह कि प्रत्येक भाषा में आर्य शब्द का लग भग एक अर्थ होने से संस्कृत का भाषाओं की माता होना सिद्ध हो सकता है । द्वितीय हमारे एक अमरीकनभाई के हृदय में आर्य शब्द के अर्थ व प्रतिष्ठा किसी भांति या किसी भाषाद्वारा बैठ जाना और जो मैंने अपने इस दावे का समर्थन न करके (कि आर्य शब्द का अन्वेषण हर प्रकार संस्कृत में ही होना ठीक है) जो कुछ एक अर्थ के शब्द अन्य भाषाओं के लिख दि

हैं वह केवल पादरी साहब की शान्ति व आर्य शब्द का अर्थ उनके हृदय में बैठाने को ठीक उसी प्रकार लिखे हैं जैसे साहब लोग अपने बच्चों को अक्षर पहचनवाने के लिये चित्रों वाले अक्षर दिखाते हैं। ओ३म् शान्तिः ३ ॥

आपका शुभचिन्तक—हनुमान्प्रसाद मास्टर एङ्गलो वैदिकस्कूल स्थान शिवरामऊ—जि० फर्रुखाबाद १ । ९ । ८७ ई०

जिस से हमारी जाति शुद्ध व यथार्थ नाम व धर्म पर ध्यान दे के आलस्य की निद्रा से जागे और सीधे मार्ग पर स्थित रहके कुत्सिताचारों से दूर रहे ॥

अब नमस्ते शब्द के विषय में कुछ निवेदन करना चाहता हूं—

हमारे हिन्दू भ्राताओं में उन्हें अपना ठीक नाम आर्य भूल गया वैसे ही परस्पर मिलने के समय भी बहुत व्यर्थ व ऋषिमुनिकृत ग्रन्थों के विरुद्ध अनवसर शब्द बेसमझे बूझे प्रचलित हैं। जैसे जयराधे कृष्ण। जय सीताराम। राम २। हरिरामजी। जय हरी। पैरीपौना। बंदगी। पांवलागैं। माथा टेकना। नमोनारायण। आदेश। जय शंभु। जय देवी। माता की जय। आशीर्वाद इत्यादि—जहां लों अन्वेषण किया गया इन बातों का पुरानी पुस्तकों

में चिह्न नहीं है जिस्से ठीक सिद्ध है कि पुराने आर्यमहात्मा उस समय में (जब सत्य धर्म की उन्नति थी) इन का प्रयोग नहीं करते थे और जब से यह बातें काम में लाई गईं तब से घर २ में फूट—डाह—झगड़े के गोबर से चौका फिरा दृष्टि आता है। मत मतान्तरों के बखेड़े पृथक् २ इष्टदेव आदि भी इसी अनैक्य व फूट के कारण देखाई देते हैं। नहीं तो एक ईश्वर के भक्त होने से इन का चिन्ह भी मिलना असम्भव होगा। आर्यवर्त्त की पवित्र भूमि में प्रति दिन असत्य व उत्पन्न हुई वस्तुओं की पूजा का फैल जाना और आज कल अवनति की उन्नति होना केवल ऐसे ही कारणों से है। और जबलौं भलीभांति इन व्यर्थ बातों का खण्डन न होगा, अनैक्य दूर होना असम्भव है। जहांलौं सनातन ऋषिमुनिप्रणीत आर्षग्रन्थों को देखा जाता है " नमस्ते " शब्द का परस्पर प्रयोग करना पाया जाता है जो प्रेम व एकता मिलाप व शील के बढ़ाने के लिये अति उत्तम है। स्यात् किसी भाईको संदेह हो कि नमस्ते शब्द सनातन ग्रन्थों में कहां पर आया है अतः आवश्यक हुआ कि थोड़े से प्रमाण दिये जावें।

कोई २ ब्राह्मण देवता (जिन को सत्यप्रियता से अपनी पसंद अधिक प्रिय है) समान जनों में तो नमस्ते का

प्रयोग स्वीकार करते हैं परन्तु छोटे से बड़े वा बड़े से छोटे के लिये नहीं पसंद करते किन्तु अनुचित जानते हैं अतः उचित जाना गया कि तीनों का क्रमानुसारप्रमाण देवें॥

(१) तैत्तिरीयउपनिषद्वाक्य–

ओ३म् शन्नोमित्रःशंवरुणः शन्नोभवत्वर्य्यमा। शन्नइन्द्रोबृहस्पतिः शन्नोविष्णुरुक्रमः । नमोब्रह्मणेनमस्ते वायो त्वमेवप्रत्यक्षं ब्रह्मासि । त्वामेवप्रत्यक्षं ब्रह्मवदिष्यामि ऋतं वदिष्यामि सत्यंवदिष्यामि तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु अवतु माम् अवतु वक्तारम् ॥

(२)नमस्ते अस्तु विद्युते नमस्ते स्तनयित्नवे। नमस्ते अस्त्वश्मनेषेनादूडाशेअस्यसिः॥ अथर्ववेद अ० ३प्र० १काण्ड १३मं० १।

(३) यजुर्वेद अध्याय १६ मं० १–

नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतोतऽइषवे नमः बाहुभ्यामुत ते नमः ॥

(४) यजुर्वेद–

नमोस्तुरुद्रेभ्योयेदिविषोंवर्षमिषवः। तेभ्यो दशप्राचीर्दशदक्षिणादशप्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः तेभ्यो नमाअस्तुतेनोवन्तुतेनोमृडयन्तु ते यंद्विष्मोयश्चनो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः॥

(५) गीताअ० ११ श्लोक ३९

नमो नमस्तेस्तु सहस्रकृत्वः पुनश्चभूयोपि नमो नमस्ते॥

(६) विष्णुसहस्र ना० श्लोक १३३—

नमः कमलनाभायनमस्ते जलशायिने। नमस्ते केशवानन्त वासुदेव नमोस्तुते॥

(७) वि० स० ना० श्लो० १३४—

वासनावासुदेवस्य वासितंभुवनत्रयम्। सर्वभूतनिवासीनां वासुदेवनमोस्तुते॥

(८) वि० स० ना० श्लोक १३५—

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च। जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमोनमः॥

(९) चण्डीपाठ अ० ५ श्लोक ७ से ३४ लों—

(१०) शि० पु० उत्तर खण्ड अ० १४ श्लो० २४—

तवावबोधोभगवन्भूतानामुदयाय च। प्रलयायभवेद्रात्रिर्नमस्तेकालरूपिणे ॥

(११) शि० पु० उ० ख० अ० १४ श्लो० २८—

जगदीशस्त्वमेवासित्वत्तोनास्तीवईश्वरः। जगदादिरनादिस्त्वं नमस्तेस्वात्मवेदिने ॥

(१२) शि० पु० उ० ख० अ० १४ श्लो० २९—

नमः समुद्ररूपायसंघातकठिनाय च। स्थूलायगुरुवे तुभ्यंसूक्ष्मायलघवेनमः ॥

(१३) सारस्वत सूत्र २८५-

नमस्ते भगवन्भूयो देहिमे मोक्षमव्ययम्। स्वामीवां सजहासोच्चैर्दृष्ट्वानौदानयाचनाम् ॥

(१४) गुरु गोविन्दसिंह का जाप जी पौड़ी २ से लेकर ८ तक व ३४ से ५७ तक व ६५ से ७१ तक व १४४ व १८४ से १८७ तक व १९८ जाप जी ॥

(१५) कथा स० ना० अ० १ श्लोक ५२—

नमः सत्यनारायणायास्यकर्त्रे नमः शुद्धशाखायविश्वस्यभर्त्रे। करालायकालात्मकायास्य हर्त्रे नमस्ते जगन्मङ्गलायात्तमूर्त्ते ॥

(१६) यजुर्वेद—

नमोज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजाय चापरजाय च नमोमध्यमायचापगल्भाय च०॥

(१७) मनुस्मृति अ० २ श्लोक १२७–

(१८–२०) मनुस्मृति अ० २ श्लोक १३६–१३८

(२१–२३) ,, ३ ,, ३।५५–५६

यह प्रमाण तीनों अवस्थाओं के प्रयोग के लिये पूर्ण है जिन के द्वारा बड़े समान व छोटे के लिये नमस्ते का बोलना ठीक है ॥

२४–२५–२६–मनुस्मृति अ० ३ श्लोक ५७–५९ ,

अन्यस्मृतियों में भी शतशः स्थानों पर छोटे बड़ों व बड़े छोटों का सत्कार करें। यह वर्णन है ॥

२७–वा०रा० वनकाण्ड में विश्वामित्र वसिष्ठ की विदा का वर्णन–"नमस्तेस्तु गमिष्यामि"

२८–नमस्य नमस्करणीय (स्त्री) (स्या) पूजा ताज़ीम (प्रतिष्ठा) के लायक़ (योग्य) नमस्ते झुकना-सलाम-शब्दार्थभानु पृष्ठ १८५

२९–सर्वानुक्रमसूत्र नं० ८ वाक्य २४ में नमस्ते को याग्यवल्क्यजी स्वतन्त्रता पूर्वक व साधारण बोल चाल में वर्तते हैं। हठधर्मी की औषध तौ धन्वन्तरि व *लुकमान

*यह यूनान में प्रसिद्ध हकीम हुआ है–

के पास भी नहीं। पर जो सुजन ध्यान देंगे उन पर उत्तम प्रकार विदित हो जायगा कि नमस्ते शब्द से उत्तम विस्तृत और अच्छे अर्थ वाला क्या कोई और ऊपर लिखे नामों में से है ? जहां लौं विचार किया गया कोई नहीं। अतः आवश्यक है कि हम इस प्रेम ऐक्य व शील सिखाने हारे नाम का वर्ताव करें। जिस से जाति व देश की अवनति का ध्यान हो कर उस के उभार व उन्नति की ओर कटिबद्ध हों। और हिंदोस्तान को ईश्वर की कृपा व अनुग्रह से आर्यावर्त्त बनावें॥

पादरी साहेब ने नोट (टिप्पणी) में लिखा है कि यदि हिंदू नाम फ़ार्सी में बुरे होने के कारण त्यागने योग्य है तौ राम फ़ारसी में गुलाम को, इसी भांति आर्य अर्बी में कपटी जाति को, और वैद्य संस्कृत में हकीम को व फ़ार्सी में विना फल के वृक्ष (बेद) को, और अनादि जिस का अर्थ संस्कृत में "जिस का आरम्भ न हो" अरबी में शत्रुता (अनाद) को कहते हैं। वह भी त्यागना चाहिये। इसका उत्तर हमारी ओर से यह है कि राम आर्य वैद्य अनादि शब्द संस्कृत पुस्तकों में सैंकड़ों जगह हैं पर हिन्दू शब्द का चिन्ह लौं नहीं अतएव पहले नाम मानने योग्य और दूसरे सुधारने या बदलने योग्य हैं। यदि

हिंदू भी किसी आर्षग्रन्थ में होता तो हमे मानने से कब नाही थी पर विना प्रमाण (जैसा अबलौं हो चुका है) हम किसी प्रकार नहीं मानते। अतः प्रत्येक मनुष्य को उचित है कि विचार कर के सत्य को ग्रहण करे और आर्य कहाने व नमस्ते बुलाने से किसी भांति की कदापि नाहीं न करे॥

पादरी—जब दयानन्द ने सुना कि फ़ारसी भाषा में असीर्वाद का अर्थ क़ैद होने का है तो इस कारण उन्हों ने संस्कृत आशीर्वाद को त्याग दिया और उसके स्थान पर नमस्ते ठहराया। परन्तु जो आशीर्वाद है वह संस्कृत में उत्तम अर्थ रखता है और बहुत पुराना शब्द है और मनुस्मृति व अन्य विश्वासयोग्य पुस्तकों में बहुत जगह पाया ही नहीं जाता बरु उस के लिये बहुत ही दृढ़ आज्ञा दी गई है। (म० स्मृ० अ० २ श्लो० १२६)

उत्तर—पा० सा० आपने ग़लती की और स्वामी जी महाराज पर दोष दिया। स्वामीजी ने कहीं भी आशीर्वाद के त्यागने में मनाही नहीं की और न कभी इस का प्रचार किया। जो शब्द सनातन ऋषियों के ग्रन्थों में प्रचलित देखा इस लिये कि वह अति उत्तम था उसका प्रचार किया। और अनैक्यप्रचारक व सत्य व प्रेम के

मिटाने हारे को दूर किया। आपने जो मनु का प्रमाण दिया उस श्लोक में आशीर्वाद शब्द नहीं है। हां अभिवाद व प्रत्यभिवाद है। जो एक सत्कार व दूसरा उसका उत्तर है। जिसको स्वा० जी ने भी उचित बताया है त्याग नहीं किया। देखो (वेदाङ्गप्रकाश भाग ४ संख्या २४।२५।२६) अतः यह आक्षेप भी केवल धोखा देना है। किसी प्रकार उचित नहीं॥

पादरी—हिन्दू राजाओं व विद्वानों ने स्वामी दयानन्द जी व उनके पंथवालों के अतिरिक्त कभी कोई आक्षेप हिन्दू नाम पर नहीं किया। और हिन्दुओं की पुस्तकों में इस नाम का प्रचार पाया जाता है। जैसे गुरुनानक जी के आदि ग्रन्थ में बराबर इस जाति का नाम हिन्दू लिखा है। और गुरु गोविन्दसिंह साहेब को भी जो फ़ारसी में अच्छी विज्ञता रखते थे कभी यह न जान पड़ा कि जिस जाति में से हमलोग हैं उस का नाम मुहम्मदियों की ओर से बहुत बुरा रक्खा गया है अतः वह बदला जावे॥

उत्तर—हिन्दू राजों के राज्यों में साधारणतः वर्ण गोत्र अनुसार कार्य्यवाही होती है। और हिन्दू नाम मुसल्मानों के आने से प्रथम कहीं न था अब भी जो किञ्चित् प्रचार है वह नहीं के तुल्य है और वह उर्दू व फ़ारसी की

कृपा है। पर राजों की उपाधियों में अब भी आर्य्य कुल-दिवाकर इन्द्र महेन्द्र आदि संस्कृत के यथार्थ शब्द शोभा देते हैं हिन्दू कहीं नहीं। शेष रहा आर्य्यकुल सत्योपदेशक बा० नानक जी महाराज के आदि ग्रन्थ में हिन्दू शब्द का होना। वह हमें स्वीकार है। पर प्रभाव फ़ारसी की शिक्षा का है और मुसल्मान राज्य व देशभाषा में समझने के कारण लिखा, नहीं तो कभी न होता। और न मानपूर्वक उन्हों ने इस का वर्णन किया। किन्तु साधारण रीति से सत्यधर्म का उपदेश पञ्जाबी भाषा में दिया। जिस ने लक्षों हिन्दुओं को मुसल्मान होने से बचाया और सत्यधर्म पर स्थिर किया। (अधिक देखो "सुमोचश्मआर्य्य" के उत्तर में) शेष रहा यह कि वीरत्व के रूप सत्यग्राही समरविजयी पुरुषसिंह महाबली गुरु गोविन्द सिंह जी महाराज को इस नाम का बुरा न जान पड़ना। यह आप की ग़लती व अनजानकारी है। यदि आप किंचित् भी उन के इतिहास व आज्ञाओं को जानते होते तो ऐसा कभी न कहते। उन्होंने फ़ारसी में उत्तम योग्यता रखने के कारण इस के बुरे अर्थ को भलीभांति समझ के त्याग दिया। और सिक्ख या सिंह प्रत्येक व्यक्ति का

नाम रख के अपने समस्त अनुयायियों के समूह का नाम ख़ालसा जाति रक्खा जिस के अर्थ फ़ारसी में वही हैं जो आर्य्य शब्द के। या यों कहो कि यह उसका लफ़्ज़ी तर्जुमा है। (देखो ग़यासुल्लुग़ात व मुंतख़िब व कश्फ़) "ख़ालिस व ख़ालसा। ख़ासा व नयामेख़्तः बचीज़े ब पाक व बेआमेज़ यानी बे आमेज़िश "। अर्थ " पवित्र व बिना मिलावट स्वच्छ पदार्थ (अ० वा०) उन के समस्त अनुयायी और सम्पूर्ण पढ़े लिखे सिंहभाई हिन्दू नाम को बुरा जानते हैं। सिक्ख और सिंह आर्य्य भ्राताओं के समझाने के लिये और ख़ालसा मुहम्मदियों आदि के समझाने को है। अतः यह दावा आप का महानिर्मूल है॥

पादरी—विचार का स्थान है कि अकबर बादशाह जो मंतअस्सुब प्रसिद्ध है और जिस के समय में बहुत से हिन्दू बुद्धिमान् वैभवशाली मन्त्री फ़ार्सी में पूर्ण योग्यता रखने वाले स्वतन्त्रतापूर्वक हो चुके हैं, उस समय उन्होंने भी इस नाम पर कुछ ऐतराज़ न किया। अतः जिस दशा में हिन्दुओं के पुरुषा इसी का प्रचार करते व अपने ऊपर स्वी करते रहे हैं और कुछ संदेह न किया। तो इससे ज्ञात होता है कि वह इसे अच्छा जानते थे नकि बुरा॥

उत्तर—यह नियम (क़ायदा) है कि लैंजवा दो भाषाओं का मुक़ाबला व उनकी तौल नहीं होती। और जब तक इस के लिये स्वतंत्रता नहीं मिलती। जबलों दोनों भाषाओं का मनुष्य विज्ञ नहीं होता। तब लों किसी प्रकार का मुक़ाबला नहीं कर सक्ता है। और सब संसार जानता है कि अमीर व वज़ीर लोग आरामतलब या राज्यकार्य्य में लगे हुये होते हैं। इस कारण धर्म की पड़ताल व कुरीतियों के दूर करने का अवसर बहुत ही थोड़ा मिलता है। यह भी कोई प्रमाण नहीं है कि उन्हों ने कोई ऐतराज़ (आक्षेप) न किया। जिस प्रकार नहीं किया केवल कहा जा सक्ता है। इसी भांति हम कह सक्ते हैं कि किया हो तो क्या आश्चर्य्य। केवल कोई लेख नहीं है। सो उसका प्रभाव दोनों पार्टियों पर समान है। वह हिन्दुओं के बुज़ुर्ग भी न थे किन्तु केवल धनी पुरुष थे। सांसारिक प्रतिष्ठा के अतिरिक्त हिन्दू किसी मान व प्रतिष्ठा की दृष्टि से उन को प्रतिष्ठित नहीं मानते हैं।

पादरी—हिन्दू और आर्य्यों को निज नामों के अर्थ अपनी भाषा संस्कृत में देखने चाहिये न कि फ़ारसी आदि में॥

- उत्तर—प्रत्येक मनुष्य जो कुछ भी बुद्धि रखता हो। और उस की बुद्धि को किसी स्वार्थ ने अंधा न कर दिया हो। वह अवश्य न्याय से कहेगा कि हमने जितना आर्य व आर्य्यावर्त्त के सम्बन्ध में स्वीकार व हिन्दू और हिन्दोस्तान के से अस्वीकार किया है वह उसी तहकीकात (अन्वेषण) से है जो हमने संस्कृत के अनुसार पादरी साहब के कथनानुसार की है। इस कारण कि संस्कृत में इन दो शब्दों का कुछ अर्थ नहीं है। और न किसी कोष इतिहास पुराण या धर्मपुस्तक में यह शब्द हैं। अतः आप के कथनानुसार भी हम को और समस्त देशवासियों को इन बुरे नामों का त्याग आवश्यक है। हम किञ्चित् भी ऐसा नहीं करते कि संस्कृत शब्दों को फार्सी के जीते हुये समझ छोड़ देवें किन्तु हम तो जो सच्ची व धर्मानुसार बात है उसको स्वीकार करके असत्य व बुराई को जो कलंक की नाईं विदेशी हठधर्मियों ने लगाये हैं त्याग करते हैं॥

और यही आर्य्यसमाज का चौथा शुभ नियम है कि "सत्य के ग्रहण करने व असत्य के त्यागने में सर्वथा उद्यत रहना चाहिये" अतः हमने इस नियम पर दृष्टि

करके आप के सब आक्षेपों के उत्तर निवेदन कर दिये। प्रत्येक सात्यग्रही को आवश्यक है कि बुरी बातों बुरे नामों और बुराई से बचने को बड़े पुरुषार्थ से जहां लौं शीघ्र हो सके उद्यत होवे परमात्मा आप की धार्मिक इच्छाओं में उन्नति देवे।

इति॥

—o—

नोट—हिन्दू शब्द के और भी अर्थ हैं। जो इस पुस्तक में नहीं लिखे गये हैं वह भी बुरे ही हैं अतः यहां पर लिख देना उचित समझता हूं। यह मैं ने "आर्य्यपत्र" बरेली से उद्धृत किये हैं। "इन की किताब ग़यासुल्लोग़ात आदि २ सफ़हा (पृष्ठ) ५०९ मतबूए मुंशीनवलकिशोर में यह मानी लिखे हैं—

हिन्दू के मानी—

गुलाम, काफ़िर, दुज़्द (चोर रहज़न (बटमार) हबशी, काले रंग वाला, अर्बी, नास्तिक, बेदीन, मुशरिक (ईश्वर के साथ अन्य को शरीक बताने वाला) तिल, मस्सा,

गुरु विरजानन्द ५०७०।
आदर्श पुस्तकालय
परिग्रहण क्रमांक ... 5134
दयानन्द महिला महाविद्यालय

* खाल, छछून्दर ... के हैं" (देखो आ० प० बरेली भाग ३ अंक १ पहला बाबत मास जनवरी सन् १८८६ ई० पृष्ठ ३ कालम १ पङ्क्ति ५ से ११ तक)

" इन में कई अर्थ इस पुस्तक में आये भी हैं। परन्तु जो नहीं आये उन के कारण उक्त पंक्तियों की पूरी नकल करदी है। छोड़ देना आवश्यक न समझा ॥

---

* जहां लों ज्ञात हुआ हिन्दू शब्द का उत्तम अर्थ कहीं पाया नहीं जाता खाल तिल ही को कहते हैं। फिर दोनों शब्द लिखने का कारण ज्ञात नहीं होता'॥

आर्य्य भाइयों का शुभचिन्तक
रामविलास शर्मा अनुवादक

इति ॥

श्रीछत्रपति शिवाजी महाराज का जीवनचरित्र ।)

ऐसा कौन द्विज है जो शिवाजीका जीवनचरित्र पढ़कर प्रसन्न न हो। इन का साहस उद्योग और वीरता का स्वाद औरङ्गज़ेब से बढ़ कर और किसी को नहीं मिला, उस समय में मुसलमानों को पराजित कर आर्य्यजाति का गौरव रखना इन्हीं का काम था।

पता—ब्रह्मानन्द सरस्वती सदर—मेरठ